रात्रीक्लास 25.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद हैं?

भाषण करना है। प्रैक्टिस होगी। सीखेंगे भी। खुशी होगी। स्टुडेंट पढ़ते2 टीचर बन जाये तो खुशी की बात है ना। टीचर तो सबको बनना ही है। गाइड बनना है। बाप नहीं बन सकते। तुम ब्राह्मण सब गाइड हो। तुम हो ही पंडे। पंडे यात्रा पर ले जाते हैं। तो तुम भी पंडे के बच्चे पंडे हो। यह है पांडव सेना। सम्पूर्ण पवित्र बनना है। निश्चय है वापस जरूर जाना है। फिर आना है नई दुनियां में। वापस जाने लिए ही बाप समझ जाते हैं मनमनाभव। पतित–पावन को याद करना है। याद के लिए ही बाप ज्ञान देते हैं कि ऐसे याद करो। इसलिए याद की यात्रा कहा जाता। बाकी वह यात्राये तो अनेक हैं। बच्चे तो बहुत सर्विस करते रहते हैं। टॉपिक्स पर भाषण करेंगे। बाबा को टॉपिक्स लिखकर भेजी थी। बाबा ने लिखा था पहले विचार–सागर–मंथन कर लिखना है। शुरू में करांची में रात को 2बजे हम वाणी लिखते थे। बच्चों को भी प्रैक्टिस करनी है। सिर्फ लिखत पढ़नी नहीं है। ओरली भाषण करना अच्छा है। है तो समझाना बहुत सहज। बाप का परिचय देना है। उंच ते उंच भगवान तो कहते हैं ना। यह बाबा ने कहा था लिखो हम परमपिता परमात्मा के बायोग्राफी सुनावेंगे। शिवजयंति गाई जाती है। उसने क्या आकर किया। जयंती है तो जीवनकहानी भी चाहिए। जब तुम समझाते हो तो समझते हैं बरोबर भगवान एक है। बाकी ज्ञान यज्ञ में विघ्न तो पड़ेंगे ना। मूल बात विघ्न पड़नी ही है विकार पर। विघ्न डालते हैं माया के मुरीद। फिर भी यहां ही आवेंगे। जावेंगे कहां? बच्चों को पता है विघ्न पड़ेंगे। बाप कहते हैं याद की यात्रा में रहो। लिखते है। बाबा हम प्रवस (परवश) हो जाते हैं। बाप कहते हैं इस हालत में पाप नही होता है। मूल बात है याद की यात्रा की। यात्रा की पढ़ाई बहुत सहज है। बाप दिन–प्रतिदिन गुह्य2 प्वाइंट सुनाते ही रहते हैं सब्जेक्ट। यह भी सा. किया है पुरानी दुनियां का विनाश, नई दुनिया की स्थापना। बाप को याद करने में ही मेहनत है। इसमें खर्चा आदि कुछ नहीं। शांति लगी पड़ी है। स्वधर्म है ही शांत। स्वधर्म मे टिकने लिए डायरैक्शन मिलती हैं यह भी जानते हो कल्प2 अनेक बार पढ़ी है। दैवी गुण धारण करने में मायावी पुरुषों की विघ्न पड़ती हैं। काम का कोध का भूत होता है ना। भूत सम्प्रदाय वा आसुरी सम्प्रदाय बात एक ही है। आसुरी सम्प्रदाय क्यों कहा जाता है?क्योंकि उनमें 5भूत है। रावण द्वारा हराया है। यह है ही भूतों का राज्य। मनुष्य भक्तिमार्ग में कितना घमंड में रहते हैं। जहां पतित पुजारी हैं वहां पावन पूज्य हो नहीं सकता। देवी देवताएं पूज्य हैं ना। बाप कहते हैं अभी मैं आया हूं तुम बच्चों को ले जाने। यह कब्रिस्तान है ना। तो कोई भी देहधारी आदि में मोह न रखना है। अभी तो हम जाते हैं। ज्ञान का अभ्यास बुद्धि में रहे। हम तो नये सम्बंध में जाते हैं। फिर पुराने सम्बंध से इतनी दिल नहीं लगेगी। कम कार डे दिल यार डे। तुम पुराने आशुक हो एक माशूक के। माशूक भी देखो कैसा है। सबको स्वच्छ बना देते हैं। बाप है अविनाशी सर्जन। ज्ञान अंजन भी बाप द्वारा ही मिलता है। यह है उंच ते उंच बनने लिए। स्प्रीचुअल नालेज रुहानी बाप रुहानी बच्चों को ही देते हैं। और कोई का ड्रामा में पार्ट है नहीं। तुम्हारा बाप ही रुहानी टीचर भी है। तुम्हारी भाषा ही अलग है। नई दुनियां के लिए नया ज्ञान है। देने वाला भी नया है। अच्छा ,कल शिवजयंति है। बाबा को निमंत्रण भेज देंगे। देखें आते हैं। कुछ आकर बोलते हैं। यह रसम–रिवाज है। बाबा को ड्रामानुसार भी खुद निमंत्रण दे बुलाते हैं। कुछ पूछना होता है तो। बाप को बुलाने को भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा के ....पर चलना है। जो कुछ पास्ट हुआ, ऐसे नहीं न करते तो ऐसा होता। यह घुटके खाना भी रांग है। बीती को चितवो नहीं। अभी तुम फरिश्ते बनते हो। इसलिए कल सारा दिन सफेद ड्रेस ही पहननी है। यही चादरें भी सफेद डाल देंगे। रंगीन कोई कपड़ा न हो। तो फरिश्तेपन की भासना आवे। भोजन के लिए भी कह दिया है जितना हो सके सफेद हो। अच्छा ,मीठे 2 रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट। रुहानी मीठे2 बच्चों को रुहानी बाप का नमस्ते।